egory 1 (Classes 9 to 12)			
India Winner	SATYARTH SHARMA	Halwasiya Vidya Vihar Senior Secondary School	Bhiwani
ross all languages)			

ALL INDIA ESSAY WRITING EVENT - 2012

Winner

Organized by
Shri Ram Chandra Mission
in collaboration with the
United Nations Information Centre for India and Bhutan

PARTICIPANT INFORMATION SLIP

[to be filled in BLOCK LETTERS, signed by the participant, and securely attached to the essay]

Student Name : SATYARTH SHARMA

Father's Name: DR. RAMAKANT SHARMA

Full Name of School/College : HALWASIYA VIDYA VIHAR Sr. Sec. SCHOOL, BHIWANI, HARYANA

Date of Birth (dd-mm-yyyy): 7.1.98 Standard 10th

City/Town: BHIWANI State: HARYANA Phone:

Email ID:

Category: 1st Language: Hindi हिन्दी

Topic: (जो तुम्हें भविष्य में बनना है वह बनना अभी से आरम्भ करो (

Through the submission of the Essay, the author grants and assigns all proprietary rights (including copy-right) to Shri Ram Chandra Mission. This assignment shall be deemed to be royalty-free, perpetual, worldwide and irrevocable. Shri Ram Chandra Mission may sublicense its rights through multiple tiers of sublicenses and may use, reproduce, create derivative works from, modify, publish, edit, translate, distribute, perform and display the communication or content in any media or medium, or any form, format or forum now known or hereafter developed.

I hereby declare that I am the sole person who has written this essay. Though I am encouraged to discuss the topic with others, I hereby agree to give credit to the ideas obtained from others or any reference material.

Signature of Participant : Satyarth Sharma

Sr. Number (For official use only) PCH/C1/HINDI/00958

जो तुम्हें भविष्य में बनना है, वह बनना अभी से आरम्भ करो।

स्वामी विवेकानन्द के पास एक माँ अपने पुत्र को लेकर आई- बोली 'स्वामी जी, इसे आप जैसा बनाना है क्या करूँ? स्वामी जी ने पूछा इसकी आयु कितनी है? उसने कहा- दस वर्ष। स्वामी जी मुस्करा कर बोले- इसे जो बनाना था उसका समय तो जा चुका है।
इससे सिद्ध होता है कि बनने की प्रक्रिया जितनी शीघ्रता से शुरू हो, अच्छा है। इस सुन्दर सृष्टि को सुन्दर बनाए रखने अथवा और भी सुन्दर बनाने में हम सहयोग करें इसके लिए आवश्यक है कि हम जीवन के प्रारम्भ काल से ही लक्ष्य निर्धारण कर आगे बढ़ें।

जो हम हैं, सो तो हम हैं ही, परन्तु जो हम होना चाहते हैं उसके लिए कठिन प्रयास अपेक्षित हैं। बनने में प्रयास करना पड़ता है। चाहे हम कितने ही ज्ञानी क्यों न हों, हमने शब्दकोष की तरह अपने मस्तिष्क में कितनी ही ज्ञान सामग्री एकत्र क्यों न कर ली हो परन्तु जब तक हम बनने की क्रिया का आरम्भ नहीं करते तब तक लक्ष्य सम्भव नहीं है। यह बनना जीवन निर्माण की प्रक्रिया है। कवि जयशंकर प्रसाद कहते हैं-

ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है
इच्छा क्यों पूरी हो मन की
एक दूसरे से न मिल सके
यह विडम्बना है जीवन की।

हम जो बनना चाहते हैं वह बन सकें, इसके लिए कुछ बिंदु विचारणीय हैं:-

विद्यार्थी काल वह स्थिति है जब हमारा मस्तिष्क तीव्रता से सक्रिय होता है, हमारा भावना संसार भी क्रियाशील होता है, चित्त चारों ओर की सूचनाओं का संग्रह करना चाहता है। हम अभिभावक, परिजन एवं अपने संस्कार केन्द्र - विद्यालय के सम्पर्क में होते हैं। यहाँ सही लक्ष्य का निर्धारण आवश्यक है। प्राचीन गुरुकुलों में भी शिष्य की रुचि एवं क्षमता को पहचानकर गुरु अपने शिष्य को एक लक्ष्य देते थे। आज हमें भी अपने विद्यार्थी काल के ऊर्जावान क्षणों में शिक्षा+गुरु एवं सम्भव हो तो आध्यात्मिक गुरु की समीपता में लक्ष्य का स्पष्ट निर्धारण करना चाहिए।

स्वामी विवेकानन्द, रतीन्द्रनाथ टैगोर, अब्राहम लिंकन, डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम इत्यादि अनेक उदाहरण हैं जिन्होंने विद्यार्थी काल में अपने लक्ष्य की ऐसी अमिट रेखाएँ निर्धारित कर लीं कि अनेक बाधाएँ भी उन्हें अपने लक्ष्य से डिगा नहीं सकीं।

जीवन का अर्थ है समय। समय को खो देने का अर्थ है जीवन को खो देना। समय को साधना पड़ता है। जैसे बूँद-बूँद पानी रिसता है और टंकी खाली हो जाती है, ऐसे ही पल-पल समय खर्च होता है। समय को सर्जना में लगाना ज़रूरी है। कबीर ने कहा है-

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब
पल में परलय होयगी, फेर करेगो कब?

महर्षि अरविंद,

आचार्य विनोबा, रामकृष्ण मिशन, रामचन्द्र मिशन इत्यादि ने ध्यान को महत्वपूर्ण माना है क्यों कि 'बनने' की प्रक्रिया बाहरी नहीं है, वास्तव में यह भीतरी प्रक्रिया है। चित्त भटके नहीं, मन अटके नहीं और शांति प्राप्त हो जाए, इसके लिए ध्यान ज़रूरी है। परमेश के ध्यान से अंतस मज़बूत होता है, आत्मशक्ति बढ़ती है।

अच्छी पुस्तकों का अध्ययन एवं भली संगति भी आवश्यक है। इसी प्रकार स्वयं का अनुशासन भी हमारे 'बनने' की प्रक्रिया में सहायक होता है। हमें स्वतः अनुशासन-प्रिय होना चाहिए।

महात्मा गाँधी ने जब दृढ़-संकल्प के साथ कोट और टाई उतारकर धोती पहनी, अब्राहम लिंकन ने अमेरिका के राष्ट्रपति बनने का सपना पाला और जब स्वामी विवेकानन्द शिकागो की धर्म संसद में बोलने के लिए गए तब पहले-पहल ये सभी उपहास के पात्र भी बने परन्तु इनके सकारात्मक दृष्टिकोण ने इन्हें आत्मबल प्रदान किया। इन्होने सिद्ध किया कि सकारात्मक और दृढ़ संकल्पी रहते हुए व्यक्ति जो बनना चाहता है, बन के रहता है।
ये उदाहरण हमारे पथ-प्रदर्शक होने चाहिए।

वैश्वीकरण के इस दौर में मोबाइल, इन्टरनेट जो विषैली सामग्री हमें परोस रहें हैं, इससे सावधान रहना है। अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण एवम् ईश्वरीय सत्ता पर विश्वास रखते हुए हमें अपने भीतर सकारात्मक परिवर्तन करने चाहिए क्यों कि जीवन कुछ सार्थक करने का नाम है। इसलिए उठो जागो और जो करणीय है उसे अतिशीघ्र करना आरम्भ कर दो। वर्तमान की चेतना से ही भविष्य निर्माण होता है।

यदि हम आलस्य और प्रमाद से घिरे हैं, निराशा ने हमारे ऊपर अधिकार जमा लिया है तो हमें इन स्थितियों से ऊपर उठना होगा। यह तभी सम्भव है जब हम स्वयं में परिवर्तन करेंगे। किसी कवि ने कहा है—

जीवन में कुछ बनना है तो मन को मारे मत बैठो।
आगे-आगे बढ़ना है तो हिम्मत हारे मत बैठो।।

हमारे साथ हमारा वर्तमान है। इसे समझना आवश्यक है। हम भूतकाल की चिन्ताओं एवम् भविष्य की आशंकाओं में घिरे रहकर वर्तमान का उपयोग कर ही नहीं पाते। ऐसे में हमारे 'बनने' की चेतना निरंतर धूमिल होती चली जाती है। हमें जानना चाहिए कि वर्तमान को ही भूतकाल बनना है। यदि इसे जान लिया तो भविष्य भी सुखद होगा, इसलिए वर्तमान को जी भरकर जीना चाहिए अर्थात् सदुपयोग में लाना चाहिए क्यों कि वर्तमान ही हमें बनाता है।

निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि किसी को भी जो कुछ बनना है, उसके लिए मात्र भाग्यवादी होकर हाथ पर हाथ धरकर नहीं बैठना चाहिए अपितु पुरुषार्थी बनकर साहस के साथ चेतनाशील बनकर स्वयं का निर्माण करना चाहिए क्योंकि ईश्वर भी उन्हीं की सहायता करता है जो स्वयं अपनी सहायता करते हैं। जो सदैव अपने लक्ष्य के प्रति संकल्पशील होते हैं। जो यह भली भाँति जानते हैं कि ईश्वर ने सभी को बराबर समय दिया है, यहाँ कोई किसी प्रकार का भेद नहीं किया गया है, इसलिए इस समय का सदुपयोग करते हुए हमें अभी से अपने निर्माण की

प्रक्रिया आरम्भ कर देनी चाहिए। जो तुम्हें भविष्य में बनना है उसको अभी से आरम्भ इसलिए भी करो कि कहीं देर न हो जाए। हमें ध्यान रखना है कि -

यह उम्र स्वप्न कोरे लेकर उछल रही है
ज्वाला समय की पाकर तिल-तिल पिघल रही है
कहीं स्वप्नपाश में ही बँधकर के न ढल जाए
उससे ही पहले उठकर कर्तव्यबोध कर लो।
निर्माण के प्रहरियों कर्तव्यबोध कर लो।